• सजावट...

घर को दें एथनिक लुक...

सभी अपना घर अलग-अलग तरीके से सजाना पसंद करते हैं इसके लिए कई दिनों तक शॉपिंग भी की जाती है। यह सब कई तरह से खर्चीला भी साबित हो सकता है। तो क्यों ना आज अपने बजट के अंदर खुद घर सजाया जाए। हैंडीक्राफ्ट के मामले में भारत काफी धनी है। यहां जूट, ब्रास, क्ले, मार्बल ,लकड़ी और मेटल के आर्ट पीस विदेश तक धूम मचाते हैं। हमें यह बड़ी आसानी से उपलब्ध भी हो जाते हैं। ब्रास के डेकोरेटिव पीस सजावट के लिए काफी अच्छे रहते हैं। ब्रास से बने टेबल लैंप, वॉल आर्ट बॉक्स, बाउल, आदि का यूज बड़े आराम से किया जा सकता है। इसी तरह क्ले की बनी हुई पॉटरी जो आपके घर के सजावट से मेल खाते हुए टेराकोटा, रेड, ब्लैक या ग्रे हो सकती है। लकड़ी में भी कई ऑप्शन मिल जाते हैं। मार्बल के भी अनगिनत टाइप के हैंडीक्राफ्ट वास, मूर्तियां, पूजा थाली आदि से घर सजाया जा सकता है।

घर से मैच करते हुए कुछ आर्ट पीस घर को एथनिक लुक प्रदान करते हैं। जब कोई फेस्टिवल हो तब मिथिला पेंटिंग, तंजौर पेंटिंग के अलावाकुछ अलग तरह से यदि घर सजाना चाहती हैं तो अपनी वार्डरोब से कुछ ऐसी सिल्क की साड़ियां या जरी की साड़ियां निकालें और उन्हें फ्रेम करवाकर आप सबको हैरान कर सकती हैं। इसी तरह फुलकारी के कुछ पीस को आप प्रिंट करवा कर दीवारों पर सजा सकती हैं।
अगर आपके यहां का फर्नीचर ट्रेडिशनल इंडियन लुक का है तो एथनिक रूप से सजावट करने में आपको अधिक जद्दोजहद नहीं करनी पड़ेगी। एथनिक लुक के लिए कुशन कवर या सोफा कवर एक हथियार के जैसे काम करते हैं।
एथनिक रूप से घर की सजावट तभी पूरी होती है जब सेंटरपीस इंडियन स्टाइल का हो। इसके लिए आप लकड़ी, राजस्थानी संगमरमर, मिट्टी या ट्राइबल संस्कृति का भी कोई आर्ट पीस लगा सकते हैं। यही नहीं राजस्थानी ब्रासो या लकड़ी की बनी कोई भी कलाकृति रखी जा सकती है। इससे आपके घर की लुक बदल जाएगी।

• जन्मदिन...

पंडित बालकृष्ण शर्मा नाम ही संस्थान...

कांगड़ा का कभी न भुलाया जा सकने वाला एक चर्चित चेहरा पंडित बालकृष्ण शर्मा जी का रहा है उनके कार्यों और कृतित्वों को देखते हुए उन्हें युगपुरुष कहा जा सकता है।

उपकार दिवस

❖ 76वें जन्मदिवस पर पंडित बालकृष्ण शर्मा को नमन

अपने जीवन में समाज सेवा के इतने कार्य उन्होंने किए, कि लोग स्वयं ही उन्हें मसीहा के तौर पर देखने लगे थे। पंडित बालकृष्ण शर्मा जी का जन्म जिला ऊना के लौहारा गांव में पंडित जय राम शर्मा के यहां 22 जनवरी 1944 को हुआ।

सच मायनों में यह गांव उसी दिन गौरवान्वित हुआ क्योंकि आगे चलकर प्रसिद्धि की पराकाष्ठा इसी बालक के हिस्से में आई। कालांतर में उनके पिता लौहारा गांव से कांगड़ा आए और यहां उन्होंने छोटे स्केल पर बर्तनों का व्यपार शुरू किया। यहीं के जीएवी स्कूल में पंडित जी की शिक्षा हुई और मैट्रिक के बाद उन्होंने पिता जी और भाइयों के साथ मिलकर कारोबार संभाल लिया। विभिन्न प्रतिभाओं के धनी शर्मा जी को अपनी पहचान बनाने में देर नहीं लगी। हालांकि शुरुआत भले ही जीरो ग्राउंड से हुई थी, पर देखते ही देखते पूरे कारोबार का परिदृश्य ही बदल गया।

एक कहावत है होनहार बिरवान के होत चीकने पात। अर्थात जो पौधे विशिष्ट होते हैं उनके पत्ते आरंभ से ही सुंदर और चमकदार होते हैं। कहना न होगा कि यह बात पंडित जी पर एकदम सटीक उतरती है। उनके व्यापार क्षेत्र में प्रवेश करते ही कारोबार को अनुमान से कहीं अधिक विस्तार मिला। उन्होंने कांगड़ा में ही बर्तन बनाने की फैक्टरी की शुरुआत की और यहां से पूरे प्रदेश में बर्तनों की सप्लाई होने लगी। इसी दौरान वे एक नए क्षेत्र से जुड़े। राजनीति के क्षेत्र में उनके पदार्पण के साथ ही राजनीति की भी दशा और दिशा बदल गई। वे जिला कांग्रेस के महासचिव बने और व्यपारियों ने उन पर भरोसा जताते हुए उन्हें व्यापार मंडल का प्रधान भी चुन लिया। सन् 1972 में वे निर्विरोध नगर परिषद के सदस्य चुने गए।

सफर जारी रहा 1975 से 2007 तक पंडित जी नगर परिषद के चार बार प्रधान व तीन बार उप प्रधान चुने गए। रोचक यह कि वे कभी कोई चुनाव नहीं हारे। ऐसा लगा जैसे उनका व्यक्तित्व सिर्फ जीत के लिए ही बना था। वे गुप्त गंगा धाम के प्रधान भी बने। सन् 1984 से 2007 तक वे हॉकी, क्रिकेट और बॉलीवॉल के जिला प्रधान रहे तथा जूडो कराटे के उप प्रधान भी रहे। पूरे 22 वर्ष तक बतौर दशहरा कमेटी के प्रधान, कांगड़ा में रामलीला का सफलता पूर्वक संचालन उन्हीं की देखरेख में हुआ। अपने प्रमुख कार्यों में उन्होंने समाजसेवा को प्रधानता दी। दीनदुखियों की मदद, गरीब विधवाओं को पेंशन और गरीब कन्याओं के विवाह के लिए आर्थिक मदद देकर उन्होंने सभी का दिल जीत लिया। एक महान कार्य उनका श्री बालाजी अस्पताल की स्थापना करना था, जो अब काफी बड़े पैमाने पर चिकित्सकीय कुशलता और सहायता के लिए जाना जाता है। वर्तमान में इस अस्पताल का संचालन उनके सुपुत्र डॉ. राजेश शर्मा कर रहे हैं। 9 सितंबर 2007 को यह महान विभूति हमारे बीच नहीं रही, पर जो आदर्श पंडित बालकृष्ण शर्मा ने स्थापित किए वे मील का पत्थर साबित हुए हैं।

-डॉ. राजेश शर्मा

जरूरी नहीं कि आपके घर में मड्यूलर किचन हो इस बात के लिए परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। आप सिर्फ अपनी किचन के दरवाजे के पीछे से लेकर सेलेब्स तक लंबाई में स्टैंड लगवाएं और उसमें सभी बड़े बर्तन, छोटे बड़े डिब्बे ,इस तरह से सेट करें की किचन में जगह दिखे.इस तरह किचन व्यवस्थित और स्पेशियस दिखेगी...

मॉडर्न और स्पेशियस किचन...

आज हम आपको बता रहे हैं कि कैसे आसान तरीकों को अपनाकर आप अपनी किचन को स्पेशियस और मॉडर्न लुक दे सकती हैं।

जरूरी नहीं कि आपके घर में मड्यूलर किचन हो इस बात के लिए परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। आप सिर्फ अपनी किचन के दरवाजे के पीछे से लेकर सेलेब्स तक लंबाई में स्टैंड लगवाएं और उसमें सभी बड़े बर्तन, छोटे बड़े
डिब्बे ,इस तरह से सेट करें की किचन में
जगह दिखे.इस तरह किचन व्यवस्थित और स्पेशियस दिखेगी।

- यदि आप अपने किचन में रंग करवाने जा रहे हैं, तो ध्यान रखें कि किचन में हमेशा ब्राइट कलर का उपयोग करना चाहिए। ताकि किचन बड़ा दिखाई दे। किचन को कलर करने के लिए ज्यादा रंगों का उपयोग न करके सिर्फ व्हाइट कलर का प्रयोग करें। यह रंग आंखों को सुकून देगा।
- मॉड्यूलर किचन में अधिकतर, बाहर की तरफ खींचने वाली या स्लाइड होने वाली ड्रॉअर्स होती हैं। यदि आपकी किचन में नहीं तो कोई बात नहीं आफ किचन स्लैब के नीचे के हिस्से का उपयोग कर, पुलआउट ड्रॉअर बनवाकर, लगभग सभी सामानों को अंदर रख सकते हैं। ये जगह तो कम घेरते ही हैं साथ ही इनसे सामान निकालना और रखना आसान हो जाता है व किचन भी आकर्षक लगती है।
- किचन छोटा होने पर आप दीवार पर हैंगर या बर्तन स्टैंड भी लगवा सकती हैं। इन स्टैंड्स का प्रयोग स्टील के बर्तन रखने के लिए करें और उसकी हाइट उतनी रखें जहां तक आप आसानी से पहुंच जाएं। इन हैंगर्स पर आप पैन, पॉट्स, लकड़ी के सर्विंग स्पून भी लटका सकती हैं। यही नहीं अगर आपके किचन के साथ लॉबी है तो कैबिनेट या बड़े बर्तनों को वहां रखकर आप किचन में स्पेस को बढ़ा सकती हैं।
- कॉजी मेकर, माइक्रोवेव, ओवेन, ब्लेंडर, टोस्टर और मिक्सर जैसी अप्लायेंसेस रोज प्रयोग में नहीं आती इसलिए उनको जिनकी स्लैब पर रखने की जगह ड्राअर के अंदर रखना सही रहता है।
- आप डायनिंग टेबल के साइड में या डायनिंग टेबल में बॉक्स या स्टैंड बनवाकर क्रॉकरी या रोजाना इस्तेमाल में आनेवाले बर्तन रख सकती हैं। इस तरह किचन को स्पेशियस बना सकते हैं।
- किचन में बड़ा और गहरा सिंक होने से ज्यादा स्पेस मिलती है। इनमें ज्यादा बर्तन रखने से किचन में जगह भी बचती है।
- नैचुरल लाइट से किचन और भी बड़ा और सुंदर दिखता है। किचन विंडो हमेशा खुली रखें और हलकी रौशनी वाले बल्ब लगाकर रखें।

• उपाय...

मसाले रहेंगे सुरक्षित

हम घरों में हर दिन कई प्रकार के मसालों का इस्तेमाल करते हैं और कई मसाले ऐसे होते हैं जिन्हें कभी-कभार ही इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में सबसे बड़ी मुश्किल ये होती है कि इन मसालों को किस प्रकार सही तरीके से रखा जाए कि इनमें सीलन न आ पाए और इनकी महक और ताजगी भी बनी रहे। आज हम आपको ऐसे कई तरीके बताएंगे, जिनसे आप मसालों को लंबे समय तक सुरक्षित रख पाएंगी। हर्ब और मसालों को हमेशा सूखे स्थानों पर ही रखें। नमी वाली जगह पर रखने से इनमें गोलियां जैसी बन जाती है और कीड़े पड़ जाते हैं। बहुत ज्यादा रोशनी वाली जगह पर मसालों को न रखें। रोशनी, मसालों के अंदर होने वाले औयल को औक्सीडाइज कर देता है जिसकी वजह से उनका वास्तविक जायका बेकार हो जाता है पारदर्शी जार में मसालों को रखने से बेहतर है कि किसी डार्क जार में इन्हें रखें। इससे उनमें लाइट भी ज्यादा नहीं पड़ेगी।